

हुकुक् वालदन

इमाम अहमद रजा फाजिले बरैलवी

www.jannatikaun.com

हुक्कू वालिदन

(साथ औलाद व मुस्लिम)

मुसन्निफ

आला हजरत इमाम अहमद रजा मुहदिस बरेलवी

मदार्जिन
JANNATI KAUN?

डा. मौलाना सिराज अहमद कादरी बस्तवी

(एम. ए.पी. एच.डी.)

पुस्तकसूची

सुमार	उन्वान	सफ़हा
1	पेशे लपज़	3
2	मुतर्जिम की बात	4
3	हुक्कू के वालिदेन	5
4	इफ़ादाते आला हज़रत	14
5	हुक्कू के वालिदेन बाद इन्तेक़ाल	16
6	माँ-बाप की नाफ़रमानी का ववाल	25
7	वालिदेन के साथ हुस्ने सुलूक	29
8	हुक्कू के उस्ताद	32
9	हुक्कू के मुस्लिम	43

JANNATI KAUN?

पेशे लफ्ज

आला हजरत इमाम अहमद रजा रहमतुल्लाह अलैहि के अकसर इफादात खालिस इल्मी व तहकीकी हैं उनके बहुत से इस्लाही मजामीन में भी इल्मी रंग नुमायाँ हैं। फारसी इबारत का तो वह तर्जुमा करते ही न थे क्योंकि उसे उर्दू का दर्जा देते, इसलिए कि उनके दौर में फारसी ज्यादा राइजे थी कोई साहबे इल्म घराना फारसी से बमुश्किल ही खाली होता।

अब दौर बदला फारसी व अरबी की जगह उर्दू व अंग्रेजी ने ले ली। मजाक भी इल्मी के बजाये सतही हो गया, इल्मी व तहकीकी किताबें तो कुजा उमूमन लोग तारीखी व अदबी किताबें भी नहीं पढ़ते अफसानों और नाविलों की तकरीबन हर घर में हुकूमत नजर आती है।

जो लोग इस्लाही व इल्मी किताबें पढ़ते हैं उनका भी इल्मी मजाक कोई ज्यादा बुलन्द नहीं होता आखिर वह भी तो इसी माहौल में रहते हैं माहौल ही की हैरत अंग्रेज तासीर का नतीजा है कि बेश्तर उलमा में भी जौके इल्म व तहकीक नहीं मिलता जो उनका हक है अवाम तो खैर अवाम ही हैं, इन हालात के पेशे नजर फाजिले बरेलवी अलैहिर्रहमह के इफादात आम करने के लिए जरूरी है कि उन्हें मजाके आम के मुताबिक सत्ल और आसान बनाकर पेश किया जाए।

बिरादरे मोहतरम मौलाना अब्दुल मुबीन साहब नोअमानी इस खुसूस में भी पेश-पेश नजर आते हैं। उन्होंने हुक्म के वालिदैन की जदीद तरतीब पेश की है—जो रिसाले मुबारका 'शरहुल हुक्म लिटरहिल उक्क' वगैरह की तस्हील व तौजीह है। मुहिब्बे मोहतरम की शायी कर्दा तरतीब (इर्शादाते आला हजरत) भी यही नोअय्यत रखती है—इसी सिलसिले की एक कड़ी हुक्म के औलाद है जिसका असले नाम 'मशअलतुल इर्शाद इला हुक्कुल औलाद' था, उसमें अगरचे उन्होंने कोई तौजीह व तस्हील नहीं की है मगर पैराग्राफ की तबदीली और नये तरीके पर शुमारे हुक्म लगाकर और आम फहम नाम रख कर पूरी किताब नई बना दी है, मजीद बरआं हाशिये में बाज मुश्किल अल्फाज के मानी भी लिख दिये हैं कदीम मतबूआ 'मशअलतुल इर्शाद' से अगर तरतीबे नोअमानी का मुकाबला किया जाये तो इफादियत व मकबूलियत में नुमायाँ फर्क महसूस होगा—

मुहम्मद अहमद भीरवी मिरबाही

मदरसा अर्बिया फैजुल उलूम

मोहम्मदाबाद, गोहना, मऊ

मुतर्जिम की बात

एक जमाना यह था जबकि एशिया बर्रे आजम के बेशतर मुमालिक की अयामी जवान फारसी थी और आलमी राब्ले की जवान अरबी। उस समयतमाम तर किताबें अरबी व फारसी में तस्नीफो तालीफ की जाती थीं मगर रफ्तारे जमाना के साथ इल्मी इन्हितात पैदा हुआ और अंग्रेज अपनी मसलेहत कोशिशों में कामयाब हुए। उनकी कामयाबी ने यह गुल खिलाया कि एशिया से धीरे-धीरे फारसी रुख्सत हो गई उसकी जगह नई पैदा शुदा जवान उर्दू ने ले ली और आलमी राब्ले की जवान अरबी की जगह अंग्रेजी हो गयी उसके बाद तस्नीफो तालीफ का काम उर्दू में किया जाने लगा। मगर अब जबकि इसके साथ भी इन्हिताती हादसा पेश आ रहा है तो दानिशवरों की कुव्वते फिक्र करवट लेने पर मजबूर हो गयी और उन्होंने तस्नीफो तालीफ का काम सुबाई और इलाकाई जवानों में करने का ठेड़ा उठाया उसी की एक कड़ी यह किताब भी है। जिसको मुहसिने कौमो मिलजत हजरत हाफिज व क़ारी क़मरुद्दीन रज़वी बानी रज़वी किताब घर, दिल्ली की कोशिशों से अखिरतक हिन्दी लिपि में पहुँचाई जा रही है इस किताब का सिर्फ रस्मुल खत बदला गया है न कि जवान जिससे कम से कम इसी तरह लोगों का रिश्ता उर्दू जवान से काइम रहे, मुमकिन है कभी कौम मुस्लिम को अपना भूला हुआ सबक याद आजाये—आमीन बि जाहि नबीइल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम—

फक्कत:

डा. मौलाना सिराज अहमद कादरी बस्तवी

हुक्म के वालिदेन

इशादे रब्बानी है कि :-

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَيَالِ الْيَادِينَ إِحْسَانًا ۚ إِمَّا
يَبْلُغَنَّ عِندَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا آفٍ وَ
لَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ۚ وَخَفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذِّلِّ
مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا ۝

(प १५, २६)

और तुम्हारे रब ने हुक्म फरमाया कि उसके सिवा किसी को न पूजो और माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तेरे सामने उनमें से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जायें (जोफ का गल्बा हो आजा में कुब्वत न रहे और जैसा तू बचपन में उनके पास ब ताकत था ऐसे ही वह बुढ़ापे में तेरे पास नातवा रह जायें) तो उनसे न कहना (यानी ऐसा कोई कलिमा जवान से न निकालना जिससे ये समझा जाये कि उनकी तरफ से तबीअत में कुछ गिरानी है) और उन्हें न झिड़कना, और उनसे ताजीम की बात कहना (और हुरने अदब के साथ उनसे खिताब करना और उनके लिए आजिजी का बाज़ू बिछा नर्म दिली से) यानी ब-नर्मी व तवाज्जुअ पेश आ और उनके साथ थके वक्त में शफकत व मुहब्बत का बरताव कर कि उन्होंने तेरी मजबूरी के वक्त तुझे मुहब्बत से परवरिश किया था और जो चीजें उन्हें दरकार हो वह उन पर खर्च करने में दरेग न कर और अर्ज कर ऐ मेरे रब तू इन दोनों पर रहम कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छोटेपन में पाला, (मुहुआ ये है कि दुनिया में बेहतर सुलूक और खिदमात में कितना भी मुवालिगा किया जाए लेकिन वालिदेन के एहसान का हक अदा नहीं होता इसलिए बन्दे को चाहिए कि बारगाहे इलाही में उन पर फजलो रहमत फरमाने की दुआ करे और अर्ज करे कि ऐ मेरे रब मेरी खिदमतें इनके एहसान की जजा नहीं हो सकती तू इन पर करम फरमा कि इनके एहसान का बदला हो,

फ़वाइद:

1— माँ—बाप को उनका नाम लेकर न पुकारे यह खिलाफ़े अदब है और इसमें उनकी दिलआजारी है लेकिन वह सामने न हों तो नाम लेकर उनका ज़िक्र जाइज़ है।

2— माँ—बाप से इस तरह कलाम करे जैसे गुलाम व खादिम आका से करते हैं।

3— आयत (رَبِّ الرَّحْمَنِ) से सबित हुआ कि मुसलमान के लिए रहमत व मग़फ़िरत की दुआ जाइज़ और उसे फ़ाइदा पहुँचाने वाली है। मुर्दों के इसाले सवाब में भी उनके लिए दुआए रहमत होती हैं। लिहाज़ा इसके लिए यह आयत अस्ल है।

4— वालिदैन काफ़िर हों तो उनके लिए हिदायत व ईमान की दुआ करे कि यही उनके हक़ में रहमत है (कन्ज़ुल ईमान व तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान) एक दूसरी जगह बनी इसराईल से अपने अहद को याद दिलाते हुए खुदाए तआला ने इर्शाद फ़रमाया है।
وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ

بَنِي إِسْرَءِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا (البقره २०)

और जब हमने बनी इसराईल से अहद लिया कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो और माँ—बाप के साथ भलाई करो। (तर्जुमा रज़विया)

इस आयत और इसकी पहले वाली आयत में अल्लाह तआला ने अपनी इबादत का हुक्म फ़रमाने के बाद वालिदैन के साथ भलाई करने का हुक्म दिया, इससे मालूम होता है कि वालिदैन की ख़िदमत बहुत ज़रूरी है। वालिदैन के साथ भलाई के यह मानी हैं कि ऐसी कोई बात न कहे और ऐसा कोई काम न करे जिससे उन्हें ईज़ा हो और अपने बदन व माल से उनकी ख़िदमत में दरेग़ न करे। जब उन्हें ज़रूरत हो उनके पास हाज़िर रहे।

मसाइल 1— अगर वालिदैन अपनी ख़िदमत के लिए नवाफ़िल छोड़ने का हुक्म दें तो उनकी ख़िदमत नफ़ल से मुक़द्दम है।

2— वाजिबात वालिदैन के हुक्म से तर्क नहीं किये जा सकते।

बालिदैन के साथ एहसान के बाज़ तरीक़े जो अहादीस से साबित हैं

- 1- तहे दिल से उनके साथ मुहब्बत रखे।
- 2- रफ़्तार व गुफ़्तार में नरिस्तो बरखास्त में अदब लाज़िम जाने।
- 3- उनकी शान में ताज़ीम के अल्फ़ाज़ कहे।
- 4- उनको राज़ी करने की कोशिश करता रहे।
- 5- अपने नफ़ीस माल को उनसे न बचाये।
- 6- उनके मरने के बाद उनकी वसीयतें जारी करे।
- 7- उनके लिए फ़ातिहा, सदक़ात, तिलावते, कुरआन से इसाले सवाब करे।
- 8- अल्लाह तआला से उनकी मग़फ़िरत की दुआ करे।
- 9- हफ़्तावार उनकी कब्र की ज़ियारत करे।

(तफ़सीर फ़तहुल अज़ीज़, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

आयत—3 एक और जगह बालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक की इस तरह ताकीद और हुक्म फरमाता है।

وَمَا يَنْبَغِي فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا
 (तफ़सीर प ३॥ ४॥) और दुनिया में अच्छी तरह उनका साथ दे।

आयत—4 एक और जगह खुसूसन बालिदा की तकलीफ़ को याद दिला कर एहसान का हुक्म फरमाया जा रहा है।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ
 كُرْهًا وَحَمَلُهُ وَفِضْلُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا (پ ۲۶: ۲۷)

और हमने आदमी को हुक्म किया कि अपने माँ बाप से भलाई करे, उसकी माँ ने उसे पेट में रखा तकलीफ़ से, और जना उसको तकलीफ़ से और उसे उठाए फिरना और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने में है।

बालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक का मामला सिर्फ़ जाइज़ हदों तक होना चाहिए ऐसा नहीं कि उनकी दिलदारी के लिए ग़लत और ग़ैर शरअी इक़दाम भी रवा समझ लिया जाये, इस सिलसिले में कुरआन की वाज़ेह हिदायत मौजूद है इश़ादे बारी है।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا وَإِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي

مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا (پ २०: ३६)

और हमने आदमी को ताकीद की अपने माँ-बाप के साथ भलाई की और अगर वह तुझसे कोशिश करें कि तू मेरा शरीक ठहराये जिसका तुझे इल्म नहीं तो उनका कहना न मान— (कन्जुल ईमान)

इस आयत का शाने नुजूल ये है कि हजरत सअद इब्ने अबी वक्कास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो साबिकीन अब्बलीन सहाबा में से थे और अपनी वालिदा के साथ अच्छा सुलूक करते थे। जब इस्लाम लाये तो आपकी वालिदा हमनह बिनत अबू सुफियान ने कहा तूने यह क्या नया काम किया? खुदा की कसम अगर तू इससे बाज़ न आया तो न मैं खाऊँ न पियूँ यहाँ तक कि मर जाऊँ और तेरी हमेशा के लिए बदनामी हो, और तुझे माँ का कातिल कहा जाये फिर उस बुढ़िया ने फाका किया और एक शयाना रोज़ (रात व दिन भर) न खाया न पिया न साये में बैठी इससे जर्ईफ़ हो गई। फिर एक दिन रात और इसी तरह रही—तब हजरत सअद उसके पास आए और फरमाया ऐ माँ! अगर तेरी सौ जानें हों और एक-एक करके सभी निकल जायें तो भी मैं अपना दीन (इस्लाम) छोड़ने वाला नहीं तू चाहे खा चाहे मत खा, जब वह हजरत सअद की तरफ से मायूस हो गयी तो खाने पीने लगी उस पर अल्लाह तआला ने यह आयत पाक नाज़िल फरमाई और हुक्म दिया कि वालिदेन के साथ हुस्ने सुलूक किया जाये, अगर वह कुफ़्र व शिर्क का हुक्म दें तो न माना जाये क्योंकि ऐसी इताअत किसी मखलूक की जाइज़ नहीं जिसमें खुदा की नाफरमानी हो। (खज़ाइन)

अहदीस

वालिदेन के साथ हुस्ने सुलूक और उनके हुक्म की निगहदाश्त से मुतअल्लिक हुजूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इर्शाद फरमाते हैं।

1- हदीस

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ رَغِمَ
أَنْفُهُ تَمَرًا رَغِمَ أَنْفُهُ قِيلَ مَنْ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ مَنْ أَدْرَكَ وَالِدَيْهِ
عِنْدَ الْكَبَرِ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا ثُمَّ لَمْ يَدْخُلِ الْجَنَّةَ -

مسلم شریف ثانی ص ۱۱۱، مشکوٰۃ شریف ص ۱۱۱، معجم للعالم

हजरत अबू हुदैरह रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक बार फरमाया—खाक आलूद हो उसकी नाक, फिर खाक आलूद हो उसकी नाक, अर्ज किया गया किसकी या रसूलल्लाह? फरमाया उसकी जिसने बूढ़े माँ—बाप या उन दोनों में से एक को पाया फिर जन्नती न हुआ, यानी उनकी खिदमत न की न किसी और तरह उनकी खुशनूदी हासिल की जिसके सबब वह जन्नत का मुस्तहिक होता। इस बर्दे शदीद से माँ—बाप की नाफरमानी करने वाले सबक हासिल करें और अपना अन्जामे बद मालूम कर लें।

(मिशकात शरीफ, अरसहुलमुतावेअ)

2—हदीस

وَعَنْهُ عَلَيْهِ السَّلَامُ إِيَّاكُمْ وَعُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ فَإِنَّ الْجَنَّةَ يَوْجَدُ
رِجْحُهَا مِنْ مَسِيرَةِ أَلْفِ عَامٍ وَلَا يَحْدُ عَاقٍ وَفَاطَةُ رَحِمٍ وَلَا شَيْءٍ
زَانٍ وَلَا جَارٍ زَارٍ دُخْلًا مَرَاتِنَ الْكَرِيمِ وَاللَّهُ وَرَبُّ الْعَالَمِينَ
(تفسير مدارك ۲/ ۳۳۳، احیا کتب مصر)

हुजूर मुहसिन इन्सानीयत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं वालिदेन की नाफरमानी से बचो इसलिए की जन्नत की खुशबू हजार बरस की राह तक आती है और वालिदेन का नाफरमान उसकी खुशबू न सूंघ सकेगा और इसी तरह रिश्ता तोड़ने वाला, बूढ़ा जानी तकव्युर से अपना इजार (तहबन्द, पाजामा वगैरह) टखनों से नीचे लटकाने वाला भी जन्नत की खुशबू न पाएगा। उसके बाद हुजूर ने फरमाया बिला शुक्हा किगियाई तो सिर्फ रब्बुल आलमीन ही को लाइक है।

3—हदीस

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْكِبَائِرِ أَنْ يَشْتِمَ الرَّجُلُ وَالِدَيْهِ قَالُوا
يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَنْ يَشْتِمُ الرَّجُلُ وَالِدَيْهِ قَالَ نَعَمْ يَسُبُّ أَبَا الرَّجُلِ
فَيَسُبُّ أَبَاهُ وَيَشْتِمُ أُمَّهُ فَيَشْتِمُ أُمَّهُ - (بخاری، مسلم، ترمذی ۲/ ۳۳۳)

हजरत अब्दुल्लाह बिन अमर रजियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया की

4-हदीस

عَنْ أَبِي شَرِيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ
عَلَيْكُمْ وَسَلَّمَ ثَلَاثُ دَعَوَاتٍ مُسْتَجَابَاتٌ لَا تَكُنَّ مِنْ دَعْوَاتِ الْمُنَافِقِ
وَدَعْوَةُ الْمُسَافِرِ وَدَعْوَةُ الْوَلَدِ لِرَبِّهِ
(ترمذی ج ۲ ص ۱۷۱)

5-हदीस

عَنْ أَبِي عُبَيْدٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ
مَنْ قَرَأَ بِحُرُوفِ الْقُرْآنِ نَفَسَ إِلَى اللَّهِ بِحُرُوفِ الْقُرْآنِ
حَجَّةٌ مُبْرُورَةٌ قَدْ قُضِيَ عَنْهُ حَرْجُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
اللَّهُ أَكْبَرُ حَبِ

हदीस का अर्थ है कि जो व्यक्ति अल्लाह की याद में पढ़ेगा वह अल्लाह से नज़दीक होगा।
अल्लाह की याद में पढ़ने से अल्लाह की कृपा मिलेगी।
अल्लाह की याद में पढ़ने से अल्लाह की कृपा मिलेगी।
अल्लाह की याद में पढ़ने से अल्लाह की कृपा मिलेगी।
अल्लाह की याद में पढ़ने से अल्लाह की कृपा मिलेगी।

آیت و عقلم

مِنْ رَحِيمِهِ مَنْ يُنْفِقْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
 يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا وَيُغْنِهِ بِرِزْقِهِ
 حَسْبُكَ فَتَنَالِي مِنَ رِزْقِهِ قُلْ
 لَكَ مِنْ مَالِكَ قُلْ مَعَهُ قُلْ بِرِزْقِهِ

साथों में मिलती है ।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ

وَسَيَرْجِيهِمْ فِي عَذَابٍ مُّنتَهٍ
وَالَّذِينَ يُبَذِّرُونَ مَالَهُمْ حَتَّى يَسُوءَ وُجُوهُهُمْ

अन
इश्राद फरमाया जो चाहे कि खुदा
पर उसका रिज्क बढा दे तो उसको

से तअल्लु
—हदीस

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ بَذَرَ مَالَهُ حَتَّى يَسُوءَ وَجْهُهُ
وَبُذِّرَ عَنْهُ كَرَمُهُ وَكَفَرَتْ بِهِ قُلُوبُ عِبَادِهِ وَكَفَرَتْ بِهِ قُلُوبُ عِبَادِهِ
مِنْهُ مُحَقَّقٌ وَفُضِّلَ قَوْلُهُ عَنْهُ عَنْ قَوْلِهِمْ
أَنْحَا كَرَمُهُ فِي الْمُسْتَذْرَبِ وَقَدْ

ने कि रसु ने
दूसरी
गुहारी उ
करने
स के पास
कबूल कर
ऐसा न किया
न आये यानी
नहीं

(मुस्तदररे क हाकिम)

अब्दुल मुदीन नोअनानी कादरी
रज्म १४०० एलूम कदरिया चिरया कोट, मऊ
यनुन रम १३ मुबारक हिजरी 1403

उपादाने आला हजरने

माँ बाप में किसका हक ज्यादा है?

وہ کہتا ہے کہ
میں نے اپنے
والدین کو
اپنی جان سے
بڑھ کر چاہا ہے۔

और हमने ताकीद की
आदमी को अपने माँ-बाप के साथ
नेक बर्ताव की, उसे पेट में रखे रही
उसकी माँ तकलीफ से और उसे
जना तकलीफ से और उसका पेट
में रहना और उसका दूध छुटना
तीस महीने में है।

इस आयते करीमा में रक्त-इज्जत ने माँ-बाप दोनों के हक में
ताकीद फरमा कर माँ को फिर रक्त-अलग करके गिनाया और उसकी
हक में उपादाने आला हजरने कहा कि मैंने अपने माँ-बाप को
अपनी जान से बड़ा चिन्ता रखा है।
इस आयते में उपादाने आला हजरने कहा कि मैंने अपने माँ-बाप को
अपनी जान से बड़ा चिन्ता रखा है।

وہ کہتا ہے کہ
میں نے اپنے
والدین کو
اپنی جان سے
بڑھ کر چاہا ہے۔

और हमने ताकीद की
आदमी को अपने माँ-बाप के साथ
नेक बर्ताव की, उसे पेट में रखे रही
उसकी माँ तकलीफ से और उसे
जना तकलीफ से और उसका पेट
में रहना और उसका दूध छुटना
तीस महीने में है।

इस आयते में उपादाने आला हजरने कहा कि मैंने अपने माँ-बाप को
अपनी जान से बड़ा चिन्ता रखा है।
इस आयते में उपादाने आला हजरने कहा कि मैंने अपने माँ-बाप को
अपनी जान से बड़ा चिन्ता रखा है।
की शुक-गुजारी की। (खजाइनुल इरफान)

अलान को रा... र किया" फरमाता ह शुक्र... ला मेरा और अपने
 माँ बाप का यह...
 तक बाप को ह...

1- उम्मुल मामनान रत सिदीका रजियल्लाह तआला अन्हा
 फरमाती हैं।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ
 إِنِّي أَعْلَمُ بِكَ أَنَّكَ
 أَكْثَرُ النَّاسِ حَقًّا عَلَى الْوَالِدَيْنِ
 وَأَكْثَرُهُنَّ حَقًّا عَلَى الْوَالِدَيْنِ

मैंने हुजूर अकदस सल्लल्लाहु
 तआला अलैहि वसल्लम से अर्ज की
 औरत पर सबसे बड़ा हक किसका
 है? फरमाया शौहर का मैंने अर्ज की
 और गर्द पर सबसे बड़ा हक किसका
 है? फरमाया उसकी माँ का।

हजरत अबू हुसैरा रजियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं।

يَا رَسُولَ اللَّهِ
 مَنْ أَكْثَرُ النَّاسِ حَقًّا عَلَى الْوَالِدَيْنِ
 يَا رَسُولَ اللَّهِ مَنْ أَكْثَرُ النَّاسِ حَقًّا عَلَى الْوَالِدَيْنِ
 يَا رَسُولَ اللَّهِ مَنْ أَكْثَرُ النَّاسِ حَقًّا عَلَى الْوَالِدَيْنِ
 يَا رَسُولَ اللَّهِ مَنْ أَكْثَرُ النَّاسِ حَقًّا عَلَى الْوَالِدَيْنِ
 يَا رَسُولَ اللَّهِ مَنْ أَكْثَرُ النَّاسِ حَقًّا عَلَى الْوَالِدَيْنِ

शख्स ने खिदमत अकदस
 पुख्तु...
 होकर अर्ज की या रसूलल्लाह
 सबसे ज्यादा कौन इसका
 अर्ज की फिर? फरमाया तेरी मां,
 अर्ज की फिर? फरमाया तेरी माँ
 अर्ज की फिर? फरमाया तेरा बाप।

(बुखारी व मुस्लिम)

2- सिल्ली हदयाना म इ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि
 वसल्लम फरमाते हैं।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ
 إِنِّي أَعْلَمُ بِكَ أَنَّكَ
 أَكْثَرُ النَّاسِ حَقًّا عَلَى الْوَالِدَيْنِ
 وَأَكْثَرُهُنَّ حَقًّا عَلَى الْوَالِدَيْنِ

मैं आदमी को वसीयत
 करता हूँ उसकी माँ के हक में।
 वसीयत करता हूँ उसकी माँ के
 हक में, वसीयत करता हूँ उसकी

जगादत क यह मानी हें कि खिदमत

श्वदमत कर फिर बा

यह कि अगर वालिदेन म बाहम आयस भै तनाजा

हर म आज अल्लाह बाप क दर प इजा

अदब नी अ

भियां में जोल

मुस्ताहब हागा वल अयाजु बिल्ला होना आला ।

(कमा फेल हिन्दीया)

हुक्के वालिदेन बाद इन्तेकाल

उन्मीद ही ।

2. रक्तस्राव, शूल, अतिसार, ऐंशुमकर वनस्पति का चरहना करारो कभी
अफलत न करना ।

[illegible][illegible]

6. इन पर ईश्वर का हाथ तो दकदरे कुदरत उसकी अदा
म सई (दे गिरा) दया का लड़कियाँ प्रा हो तो खुद उनकी तरफ से हज
दरना या हज्ज की इनाम कराना उ दान या उश्र का मृतालवा उन पर रहा
होना मना होगा मरना होगा य सो दौड़ो ही तो उसका काफारा देना
व कल न जानि मर र उनकी दराअत निम्मा मे जिहो जहद
करना।

उसके बाद (अर्थात् १९५५ ई.पू.) करना अगरचो शरअन अपने ऊपर
लाजिम न हो, अगरचो अपने ऊपर बार हो मरानन वह निरफ जाइदाद की
वसीयत करना कि जो पैसा मेरे वारिस या अजनबीए महज क लिए कर
गया तो शरअन १५०० मान से ज्यादा ने ये जाजते वारिसान नाफिज
नहीं कर और जाद का मुन खिय है कि उनकी वसीयत माने ओर उनकी
रुशा पूरी करने को अपनी स्वाहिश पर मुकदम जान

7- उनकी करम दान मर्ग (मात क बाद) भी सच्ची ही रखना
मसलन मा-बाप ने करम आई कि मेरा बेटा फुला जगह न जाएगा या
फुला स न मिलेगा या फुला काम करेगा तो उनके बाद यह छाल न
करना कि अब तू नही तो उनकी करम का ख्याल नहीं बलिक उसका
वैसा ही पाबन्द रहना जैसा कि उनकी जिन्दगी में रहता । जब तक कोई

फाँत हा न गुजरना ।

इय र'न रखनी ।

न हल'नी ।

हक नहीं की उन्हें कदम में भी रज पहुँचाये

तब आजिज, वह गनी है हम मुहताज ।

निकाल गये हैं ।

فَإِذَا سَمِعْتُمْ نَذِيرًا فَذُرُّهُ
مِنْ بَعْدِهِ وَارْتَدَّ عَنِ الْبَيْتِ
وَلَا يَجِزْ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلٌ
فَإِذَا سَمِعْتُمْ نَذِيرًا فَذُرُّهُ
مِنْ بَعْدِهِ

उनकी वसीयत नाफिज़ करना
और उनका घर तो दी बुजुर्ग राहत
(ताज़ीम) और जो रिश्ता सिर्फ
उन्हीं की जानिब से हो नेक बर्ताव
से उसका काइम रखना यह वह
नकाइ है कि उनकी मात के बाद
भी उनके साथ करनी बाकी है।

अल्लाहु तआला अल्लाहु वसल्लम
फरमाते हैं।

فَإِذَا سَمِعْتُمْ نَذِيرًا فَذُرُّهُ
مِنْ بَعْدِهِ

मौ चाप के साथ नेक सुलूक से
यह बात है कि औलाद उनके बाद
उनकी नेए दुआए मनाफिरत कर,

अल्लाहु तआला अल्लाहु वसल्लम

فَإِذَا سَمِعْتُمْ نَذِيرًا فَذُرُّهُ
مِنْ بَعْدِهِ

आदमी जब मौ चाप के
लिए दूआ करना छोड़ देता है
उसका रिश्ता बतअ हो जाता है।

अल्लाहु तआला अल्लाहु वसल्लम

فَإِذَا سَمِعْتُمْ نَذِيرًا فَذُرُّهُ
مِنْ بَعْدِهِ

जब तुम म कोई शरस कुछ नपल
करात कर तो चाप की लगे
आन मा चाप की तरफ से कर
कि उसका सवाव उन्हें मिलेगा
और उसका सवाव से कुछ न
घटेगा।

अल्लाहु तआला अल्लाहु वसल्लम

उन मौ चाप के साथ निन्दगी में नेक सुलूक

अल्लाहु तआला अल्लाहु वसल्लम

फरमाया।

बाद मर्ग नेक सुलूक से

रोजे रखे। مَصِيَامِك - ارودہ مدقطنی

भी सवान मिलेगा और तेरा भी कम न होगा।

JANMATI है, कुछ कमी न होगी।

उठेगा।

फरमाया -

بَرِيحٌ فِي مَنَاسِكِ
فِي وَصِيَّةٍ
عَبْدِي فِي مَنَاسِكِ
وَأَتَمُّ عَمَلٍ

...
बेचना अगर काफी हो जाये फबिहा
वरना मेरी कौम बनी अदी से भाग कर
...
... और ...

कर्ज अदा फरमा दिया।

عَدَّ حَقِّي غَدًا أَكْتُبُ بَوَكْرَ
عَرَّ كُتِبَ رَعْلُ أَكْتُبُ وَصِيَّةَ
أَكْتُبُ نَبِيَّ كُتِبَ كُتِبَ بَوَكْرَ

دَحْجَةُ السَّرَجِلِ عَنْ

أَكْتُبُ نَبِيَّ كُتِبَ كُتِبَ بَوَكْرَ
عَرَّ كُتِبَ رَعْلُ أَكْتُبُ وَصِيَّةَ
أَكْتُبُ نَبِيَّ كُتِبَ كُتِبَ بَوَكْرَ

سَلَّمَ مِنْ سَلَامَةِ كُتِبَ

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..
... ..

فَقَدْ قَضَىٰ عَنْهُ حُجَّتَهُ وَكَرَّمَ

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ

بْنِ سُرَيْسَةَ

ذَكَرَ أَنَّ

رَأَىٰ فِي كِتَابِ

حَدَّثَنَا وَفِي كِتَابِ

وَفِي كِتَابِ

وَفِي كِتَابِ

وَفِي كِتَابِ

وَفِي كِتَابِ

وَفِي كِتَابِ

وَفِي كِتَابِ

وَفِي كِتَابِ

وَفِي كِتَابِ

وَفِي كِتَابِ

وَفِي كِتَابِ

وَفِي كِتَابِ

سَلَامًا

وَفِي كِتَابِ

وَفِي كِتَابِ

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ

जागे और उसे दस हज का सवाब
ज्यादा मिले।

जो शख्स अपने मा बाप के बाद
उनकी कसम सच्ची करे और
उनका कर्ज अदा करे और किसी
के माँ बाप को बुरा कह कर उन्हें
बुरा न कहलवाये वह वालिदैन् के
साथ नेकोकार लिखा जाता है
अगरचे उनकी जिन्दगी में
नाफरमान था और जो उनकी
कसम पूरी न करे और उनका कर्ज

कहकर उन्हें बुरा कहलवाये

हयात में नेकोकार था।

जो अपने मां बाप दोनों में या एक
की कब्र पर हर जुमा के दिन
जियारत को हाजिर हो अल्लाह
तआला उसके गुनाह बख्श दे और
माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक
करने वाला लिखा जाय।

जो शख्स राजे जुमा अपने वालिदैन्
या एक की जियारत कब्र करे और
उसके पास यासीन पढ़े दरख् दिगा
जाए।

من ارفق بقریبہ و اشد شری
 کل جنتہ تفریحہ و عیشہ
 عذوبہ کج حریف نہی
 من اشد شری و ارفق بقریبہ

فقریبہ و ارفق بقریبہ
 من اشد شری و ارفق بقریبہ
 من اشد شری و ارفق بقریبہ
 من اشد شری و ارفق بقریبہ

JANNATI KAI २३
 गाम इब्नुल ओजी

वराल्लम-

مَنْ أَحَبَّ أَنْ يَسْكُنَ فِي جَنَّةٍ

साथ हुस्ने सुलूक करे वह साप के

وَحِينَ مَضَىٰ زَيْدُ بْنُ مَرْثَدَةَ إِلَىٰ

بَنِي إِسْرَءِيلَ إِذْ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُ

الْكَهْنِ أَنْ يُنْفِخُوا فِي صُرُوفِهِمْ عَلَىٰ مَرْثَدَةَ لِأَنَّهُ

پس اللہ

مِنْ أَسْرَىٰ لَهُمْ فَكَفَىٰ لَهُمْ خَزَنَتُ الْكَهْنِ وَصُرُوفُهُمْ حَبَاطَ الْمَسِينِ

وَمِنْ فِي وَسْطِهِمْ أَبُو سُلَيْمَانَ الْهَارِيُّ الَّذِي كَفَىٰ

الْكَهْنُ وَصُرُوفُهُمْ حَبَاطَ الْمَسِينِ

پس اللہ

إِنَّ أَسْرَىٰ لَهُمْ فَكَفَىٰ لَهُمْ خَزَنَتُ الْكَهْنِ

وَمِنْ فِي وَسْطِهِمْ أَبُو سُلَيْمَانَ الْهَارِيُّ

الَّذِي كَفَىٰ الْكَهْنُ وَصُرُوفُهُمْ حَبَاطَ الْمَسِينِ

وَمِنْ فِي وَسْطِهِمْ أَبُو سُلَيْمَانَ الْهَارِيُّ

وَصُرُوفُهُمْ حَبَاطَ الْمَسِينِ

وَمِنْ فِي وَسْطِهِمْ أَبُو سُلَيْمَانَ الْهَارِيُّ

الَّذِي كَفَىٰ الْكَهْنُ وَصُرُوفُهُمْ حَبَاطَ الْمَسِينِ

وَمِنْ فِي وَسْطِهِمْ أَبُو سُلَيْمَانَ الْهَارِيُّ

خَيْدُودَ ابْنِ رَيْثَانَ بْنِ رَيْثَانَ بْنِ

رَيْثَانَ بْنِ رَيْثَانَ بْنِ رَيْثَانَ بْنِ

رَيْثَانَ بْنِ رَيْثَانَ بْنِ رَيْثَانَ بْنِ

وَمِنْ فِي وَسْطِهِمْ أَبُو سُلَيْمَانَ الْهَارِيُّ

الَّذِي كَفَىٰ الْكَهْنُ وَصُرُوفُهُمْ حَبَاطَ الْمَسِينِ

وَمِنْ فِي وَسْطِهِمْ أَبُو سُلَيْمَانَ الْهَارِيُّ

پس اللہ

فَخَزَنَتُ الْكَهْنِ وَصُرُوفُهُمْ حَبَاطَ الْمَسِينِ

وَمِنْ فِي وَسْطِهِمْ أَبُو سُلَيْمَانَ الْهَارِيُّ

الَّذِي كَفَىٰ الْكَهْنُ وَصُرُوفُهُمْ حَبَاطَ الْمَسِينِ

وَمِنْ فِي وَسْطِهِمْ أَبُو سُلَيْمَانَ الْهَارِيُّ

الَّذِي كَفَىٰ الْكَهْنُ وَصُرُوفُهُمْ حَبَاطَ الْمَسِينِ

وَمِنْ فِي وَسْطِهِمْ أَبُو سُلَيْمَانَ الْهَارِيُّ

وَمِنْ فِي وَسْطِهِمْ أَبُو سُلَيْمَانَ الْهَارِيُّ

الَّذِي كَفَىٰ الْكَهْنُ وَصُرُوفُهُمْ حَبَاطَ الْمَسِينِ

وَمِنْ فِي وَسْطِهِمْ أَبُو سُلَيْمَانَ الْهَارِيُّ

الَّذِي كَفَىٰ الْكَهْنُ وَصُرُوفُهُمْ حَبَاطَ الْمَسِينِ

وَمِنْ فِي وَسْطِهِمْ أَبُو سُلَيْمَانَ الْهَارِيُّ

الَّذِي كَفَىٰ الْكَهْنُ وَصُرُوفُهُمْ حَبَاطَ الْمَسِينِ

گوناہوں سے رنج نہ پہنچاؤ۔

25
विल जुम्ला

وَلَا تَكُن مِّنَ الْكَافِرِينَ

وَلَا تَكُن مِّنَ الْكَافِرِينَ

आलाह की आज्ञाओं का स्वाद

स्वर्ग है—हदीस शरीफ में है—

परमान है ।

إله معجزة الوار

«الطبراني عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم»

इताअत है और अल्लाह की

मअसियत ।

करमा है ,

करमा है ।

परमान है

परमाने है ।

شَرُّهُ وَلَا عَدْلًا عَاقٍ وَمَثَانٍ

وَمَثَانٍ بَيْنَهُ

داہن ابی عامر فی السنۃ عن ابی امامہ

फरमाता, आक और सदका दकर

...

...

मानने वाला ।

धराल्लम-

...

...

...

...

...

...

...

फरमाते हैं-

...

...

...

...

...

...

अल्लाह का शरीक ठहराना और
मौं बाप को सताना ।

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَعْلَمُ خَلْقَهُمْ سَاعَاتِهِمْ

तआला अलौहे वसल्लम ने फरमाया

नासिरुल्लाह की राह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अमल है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا وَمَا كُنَّا لِنَكُونَا لَهُ شَاكِرِينَ إِلَّا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ لِهَذَا إِنَّهُ لَكَنُورٌ
 وَلَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ قَتَلْتُكَ فَجَاءَنِي بِالْمَوَدَّةِ الْمُبِينَةِ

कौन सा अमल ज्यादा महबूब है
 खुदा के नजदीक, फरमाया: वक्त
 पर नमाज अदा करना मैंने कहा फिर
 कौन, फरमाया: वालिदेन के साथ
 नेकी, कहा, फिर कौन, फरमाया:
 अल्लाह की राह में जिहाद।

की जाए और नाराज करना हाराम है।
 भी है कि कोई ऐसा काम न करे जो उनको नापसन्द हो। अगरचे उसके
 लिए खास तौर पर उनका कोई हुक्म न हो इसलिए की उनकी
 और नाराज करना हाराम है।

2- हजरत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
 फरमाते हैं। एक शख्स हुजूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
 के पास गया और बोला:

يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي نَذَرْتُكَ
 مَعَى رَسُولِ اللَّهِ وَأَمْرًا
 مِنْ دُونِكَ أَسْأَلُكَ فِيهِ
 نَعْمَ كَرَاهِيَا حَقٌّ فَصَلِّ

मैं आप से हिजरत और जिहाद पर
 का तालिब हूँ हुजूर सल्लल्लाहु
 तआला अलैहि वसल्लम ने
 दरियाफ़्त फरमाया क्या तुम्हारे
 वालिदेन में से कोई जिन्दा है,
 उसने अज किया दोनों जिन्दा हैं।
 फेर दोस्त फरमाया क्या खुदा

हां, तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला
अलैहि वसल्लम ने फरमाया अपन

उनके साथ ठीक से रह ।

جنت ابایعت علی "رجبہ"

आया है और

JAMMATI बूने झुकाये रूजाया है ।

यमन का रहने वाला एक शख्स
हिजरत करके हुजूर सल्लल्लाहु

कहा नहीं, फरमाया: तू उनके पास
लौट जा और इजाजत तलब कर
अगर वह इजाजत दे तो फिर
जिहाद कर वरना उनके साथ दुस्ते
सुलूक में मशगूल रह ।

فَسَبِّحْهُمْ وَنُحْمًا وَنُحْمًا وَنُحْمًا

मरती है।

ان جاشیه رضی اللہ تعالیٰ عنہ

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

अन्हु से रिदायत है फरमाते हैं—

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

فقال یرسول اللہ اردت اغزو

कि वह हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाजिर हुए और अर्ज किया, या हुजूर ने इराद का इरादा कर लिया है और आप के पास आया हुआ हुजूर ने फरमाया: क्या तुम्हारी माँ है, अर्ज किया हां, फरमाया: तू उसकी खिदमत कर बेशक जन्नत उसके कदमों के पास है।

कि मैं हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास आया कि तेरी माँ जिन्दा है, मैंने कहा हा फरमाया: तो उन्हीं की खिदमत मे रह इरालिए की जन्नत उन्हीं के कदमों के नीचे है।

हुजूर ने इराद का इरादा

मैं हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाजिर हुआ और अर्ज किया, या हुजूर ने इराद का इरादा कर लिया है और आप के पास आया हुआ हुजूर ने फरमाया: क्या तुम्हारी माँ है, मैंने अर्ज किया हां, फरमाया: उसके कदमों को लाजिम पकडो वहीं जन्नत है।

हर



हाकि जुदीन करूरी से है।

وہی کہ جس نے اپنے حق کو چھوڑ دیا
وہی کہ جس نے اپنے حق کو چھوڑ دیا
وہی کہ جس نے اپنے حق کو چھوڑ دیا
وہی کہ جس نے اپنے حق کو چھوڑ دیا

इसी में गराइव से है।

وہی کہ جس نے اپنے حق کو چھوڑ دیا
وہی کہ جس نے اپنے حق کو چھوڑ دیا
وہی کہ جس نے اپنے حق کو چھوڑ دیا
وہی کہ جس نے اپنے حق کو چھوڑ دیا

हराम तातार खानिया से है।

بِقَدْرِ حَقِّ مَتْلَبِ
وہی کہ جس نے اپنے حق کو چھوڑ دیا

यानी फरमाया इमाम जन्दवीस्ती ने
आलिम का हक जाहिल पर और
न करे और उसके बैठने की जगह
गैबत (अदमे मौजूदगी) में
भी न बैठे उसकी बात को रद्द न करे
और चलने में उससे आगे न बढे।

साथ बुखल न करे।
जिसने अपने हक को अपने
माँ-बाप और तमाम मुसलमानों के
हक से मुकद्दम रखे और जिसने
उसे अच्छा इत्म सिखाया अगरचे

यानी उस्ताद के हक को अपने
माँ-बाप और तमाम मुसलमानों के
हक से मुकद्दम रखे और जिसने
उसे अच्छा इत्म सिखाया अगरचे

...दत्त जहाँ ... नाफरमानों ... हुस्न ... हो
 ... गैरह ... गैरह खाते हैं,
 ... रस ... रस ...
 ... और ...
 ... और ...
 ...

... गाँव ...
 ...
 ...

... रानी ...

... गुज़ार नहीं।

... अजल व जल्ल फरमाता है।

...
 ...
 ...

...
 ...
 ...

...
 ...
 ...

...
 ...
 ...

...
 ...
 ...

...
 ...
 ...

... अजल व जल्ल फरमाता है।

कर-दी-

और बलफजे दिगर फरमया -

यस्यो तस्यो

रहन से छुड़ाना है।

12- सर के बाल उतरवाये।

14- सर पर आफरान लगाये।

21- जो मागे घर बजहे मुनासिब दे।

मुश्किल से छूटता है।

को बदल देता है।

आदत लाता है।

2. अंजन दूध साथ मिलाईं खेंचें न बरतें बल्कि अपनी ख्वाहिश का अनुसरण करने का लालच भरवें। जिस अच्छी चीज को उनका जी चाहता है उसे तन्मय कुशल न प्राय भोग खेये ज्यादा न हों तो उन्हें को खिलाये।

29- मुझे भी इन नौकरी के साथ महर व लुग का बर्ताव रख उन्हें
 नौकरी व महर व लुग के बदल के लिए दायें-वन्दे पर चढ़ाये उन
 नौकरी के खर्च बर्ताने की दायें करे ।

3) जन, लोभ मुझ देना करी, रआयत, मुझा रजत हर वकत होता
 'म' नाराज मुझ से भी न होना रख ।

31. नया गया नया बन रहा है, जो देखि देखो तो ताज फल है, नया को नया मुनासिब है।

[illegible]

35- ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

34. जहाँ सन्तान-प्राप्ति के लिये प्रयत्न करते हैं, वे स्वयं को बरतार और गन सा दे।
जहाँ सन्तान-प्राप्ति के लिये प्रयत्न करते हैं, वे स्वयं को बरतार और गन सा दे।

3. $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$ । $\frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$ ।

36— बीमार ही तो इलाज करे।

27. સામાન્ય રૂઝડાત રાત્રી વેળા ની ઇલાજ સ દર્શાવે ।

३२ । पञ्चमस्तुल्यं त्वीयं कल्पितं उक्तं ताहु किंच लक्षणात् इत्यन्तरात् ॥ ३४ ॥
पूरा कलिमए तय्यबा सिखाये ।

[illegible]

40- कुरआन मजीद पढ़ाये ।

41. एक बेलनाकार पात्र में सूर्यकुल अर्क की द्रविलन रसिदा के सुपुः
को जल और दूसरे को नमक पानी और तब से पदार्थ

4.- संयोजक तत्वों की संख्या अणु संख्या की संख्या रखें

43- इसलेम द सुन्नत गिराये दि तौन सगदा नितरन
रल नो व वयन हक पर मखलूक है उस वयल का बताया पस्थर

1. The first part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".

॥ अथ श्रीगणेशोपनिषत् ॥

ज्यादा फराद का अन्देश है।

[illegible]

यद (यूरे साँप) से बदतर है।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

संस्कृत-संज्ञा-संग्रहः

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

हो सकता है।

पलग पर अपने पास रखे।

व सीरत व सूरत गलहूज रखे।

उम्र का बड़ा बूढ़ा हो तो भी सूरत न बदले, ऐसा कांन व दीन
व सीरत व सूरत गलहूज रखे।

अगर कोई सूरत बदल दे तो उसका नाम किसी वारिस
गैर के नाम लिख देते हैं।

अपनी सूरत में कोई भी बदलाव न करे, वरना सूरत से कम हो
जाएगी।

सूरत का बड़ा बूढ़ा हो तो भी सूरत न बदले, ऐसा कांन व दीन

61- लिखना।

62- पैरना (तेराकी)।

63- सिपहगरी सिखाये।

64- सूरह माइदा की तालीम दे।

65- सूरह नूर की तालीम दे।

खास दुखार के हुकूम से है कि.....

66- सूरह नूर की तालीम दे।

67- सूरह नूर की तालीम दे।

68- सूरह नूर की तालीम दे।

69- सूरह नूर की तालीम दे।

70- सूरह नूर की तालीम दे।

71- सूरह नूर की तालीम दे।

72- सूरह नूर की तालीम दे।

73- सूरह नूर की तालीम दे।

सम दे।

76- बाला दानो मे न रहने दे।

साथ आगे।

78- जब कुहू मिल निकाह मे देर न करे।

मजहब के निकाह मे न दे।

धारा खूँ व एनराज का देखल।

... ..

... .. अपन हिकम व
... .. है उन न लगा तो हाकिम
जब करेगा ।

... .. हक
... .. है । यहाँ तक
... .. इजाजत करेगा
नाफिज नहीं ।

... .. (लडक, दुखार
... .. के स
... .. कह कर देना
... .. नि जाह
... .. मल व न नय गा
... .. जिस क बा
... .. आ
... .. दोदर उ
... ..

... .. अगर
... .. जिहाद करेगा ।



... ..



... ..
... .. फरमाते हैं ।

... ..

تاریخ

مکتبہ المصنفین

يعقوب بن عبد الله

Handwritten musical score for the song "The Rose Tree". The score is written on three staves. The first staff begins with a treble clef and a key signature of one sharp (F#). The melody is written in a simple, folk-like style. The second and third staves continue the melody, with some notes beamed together. The handwriting is in ink and appears to be a personal or working draft.

[illegible]

से रिवायत किया।

[illegible]

औरतों को खिलवाव करके फरमाया—

بسم الله الرحمن الرحيم

جہاں کہیں کہیں

مشارف احمد السامرائي

أبي القاسم

२) मुर ललना उ... हरी गोज काई
म... सी फ... हकीर
... अगर ... दिया,
... का खूर ही हो।

इस प्रकार यह ग्राम दुर्गेशी
 व मुंरुल्लन में ३ वर्षों में अथवा इससे
 १००० वर्षों में ही बन गया।
 सिवायत किया।

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

وَأَوْحَيْنَا فِي نَارِهِ

अन्दर भर्त्सों से ज्यादा होता है ।

अल्लाह अज्ज व जस्स ने फरमाया ।

وہابیہ کی رو سے اللہ تعالیٰ کے ساتھ شریعت کی تدوین کے لیے ایک خاص شخص کی ضرورت ہے۔

3. प्रजापति व नारी आर ओरों
वदने नये सत्ता । उन्होंने बहाने

يُغَيِّرُوا كَتَبُوا فَقَدْ احْتَبَلُوا بِهَا ذَا وَاشْتَأْمَيْنَا. और खुला गुनाह अपने सर लिया।

हदीस (3) हुजूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते है।

مَنْ أَذَى مُسْلِمًا فَقَدْ أَذَى
مَنْ أَذَى فَقَدْ أَذَى اللَّهِ -
أَخْرَجَهُ الطَّبْرَانِيُّ فِي الْأَوْسَطِ
عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
بِسَنَدٍ حَسَنٍ -

जिसने किसी मुसलमान को आज़ार पहुँचाया उसने मुझको अज़ीयत दी और जिसने मुझको अज़ीयत दी, उसने हक़ तआला को ईज़ा पहुँचाई इस हदीस को इमाम तियरानी ने औसत में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से सनदे हसन के साथ रिवायत किया

हदीस (4) इमाम साफ़ी ने सय्यादना अली कर्मल्लाहु तआला वजहहू से रिवायत किया कि सरकार मुस्ताफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया।

لَيْسَ مِنَّا مَنْ عَشَّ مُسْلِمًا
أَوْ ضَرَّهُ أَوْ مَكَرَهُ -

हमारी जमाअत से वह नहीं जो किसी मुसलमान से दगा करे या उसको नुकसान पहुँचाए या उसके साथ मक्र से पेश आए।

इस सिलसिले में अहादीस बकसरत हैं। यहाँ सबका जिक्र करना मकसूद नहीं।

हदीस (5) हज़रत मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया।

مَنْ أَذَى عِنْدَ مُؤْمِنٍ فَلَمْ يَنْصُرْ
وَهُوَ يَقْدِرُ عَلَيْهِ أَنْ يَنْصُرَهُ
أَذَلَّهُ اللَّهُ عَلَى رُؤُسِ الْأَشْبَادِ
يَوْمَ الْقِيَمَةِ - أَخْرَجَهُ الْإِسْلَامُ
أَحْمَدُ عَنْ سَهْلِ بْنِ حَنِيفٍ رَضِيَ

जिसके सामने किसी मुसलमान को बे इज़्ज़त किया जाये और वह कुदरत के बावजूद उसकी मदद न करे हक़ तआला उसको कियामत के दिन नग़्मला ज़लील व रुसवा करेगा। इसको इमाम अहमद ने सुहेल बिन हनीफ़ से

असनादे. हसन के साथ रिवायत किया।
 اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ بِإِسْنَادٍ حَسَنٍ -

इससे अन्दाजा लगाना चाहिए कि जब किसी मुसलमान की तजलील पर खामोशी की वजह से इस कदर दर्दनाक अज़ाब होगा तो खुद मुसलमान की तजलील किस कदर अज़ाब व ग़ज़बे रब्बुल अरबाब का बाइस है।

العیاذ باللہ تعالیٰ

हदीस (6) चूँकि रसूले पाक अलैहिस्सलातु वरसलाम अपनी उम्मत पर कमाल दर्जे की रहमत व इनायत फ़रमाते हैं इसलिए इसको जाइज़ नहीं फ़रमाते कि किसी मुसलमान के पैग़ामे निकाह पर दूसरा कोई मुसलमान पैग़ाम दे और न यह कि किसी के भाव पर दूसरा कोई भाव लगाए।

इमाम अहमद और इमाम बुखारी व मुस्लिम ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया।

أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا يَخْطُبُ الرَّجُلُ عَلَى خُطْبَةِ أَخِيهِ وَلَا يَسُومُ عَلَى سَوْمِهِ وَفِي الْبَابِ عَنْ عَقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ وَعَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا

कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कोई आदमी अपने भाई की मंगनी हो चुकने पर पैग़ाम न दे और न भाव तय हो जाने पर दूसरा कोई उस पर भाव करे इस बाब में उक़बा बिन आमिर और इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से भी रिवायत है।

यहां जब कि अभी नेअमत हासिल न हुई और न ही कब्ज़ा हुआ इस कदर शदीद मुमानिअत है तो जो किसी के ममलूका व मक़बूज़ा माल पर दस्त दराज़ी करे तो यह किस दर्जा जुल्म व सितम होगा और अज़ाब का बाइस।

हदीस (7) हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं।

لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ يَرْحَمْ صَغِيرَنَا وَلَمْ يَعْرِفْ شَرَفَ كَبِيرِنَا -

हम में से नहीं जो हमारे छोटे पर मेहरबानी न करे और हमारे बड़े की बुर्जुगी न पहचाने। इस हदीस

أَخْرَجَهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَ
الْحَاكِمُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ
الْعَاصِمِ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا
بِسَنَدٍ حَسَنٍ بَلْ مَجِيحٍ -

को इमाम अहमद व तिर्मिजी और
हाकिम ने हजरत अब्दुल्लाह बिन
उमर बिन आस रजियल्लाहु
तआला अन्हुमा से सनदे हसन
बल्कि सनदे सही के साथ रिवायत
किया।

हदीस (8) फरमाया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने।
لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ يَرْحَمْ صَغِيرًا
وَلَمْ يُوقِرْ كَبِيرًا -

हमारे तरीके पर वह नहीं जो
छोटों पर रहम और बड़ों की तौकीर
नहीं करता।

इस हदीस को इमाम अहमद व तिर्मिजी और इब्ने हिब्यान ने
हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया।
जिसकी सनद हसन है और इसी के गिरल तिबरानी ने मुअजमे कबीर में
वासिला बिन असकअ रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया।

हदीस (9) फरमाया हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने।

لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ يَرْحَمْ صَغِيرًا
وَلَمْ يَعْرِفْ حَقَّ كَبِيرًا وَلَيْسَ مِنَّا
مَنْ غَشَّنَا وَلَا يَكُونُ الْمُؤْمِنُ
مُؤْمِنًا حَتَّى يُحِبَّ لِلْمُؤْمِنِينَ
وَالْحُبَّ لِنَفْسِهِ - أَخْرَجَهُ الطَّبْرَانِيُّ
فِي الْكَبِيرِ عَنْ ضَمِيرَةَ رَضِيَ اللَّهُ
تَعَالَى عَنْهُ بِإِسْنَادٍ حَسَنٍ -

हम में से नहीं जो छोटों पर शफकत
नहीं करता और बड़ों का हक नहीं
पहचानता और वह हम में से नहीं
जो मुसलमानों को धोका देता है
और उस वक्त तक मुसलमान,
मुसलमान नहीं होता जब तक कि
दूसरे ईमान वालों के लिए वही
पसन्द न करे जो अपने लिए पसन्द
करता है इसको तिबरानी ने कबीर
में जमीरह रजियल्लाहु तआला
अन्हु से बअसनादे हसन रिवायत
किया।

हदीस (10) फरमाया हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने।

مِنْ أَجْلَالِ اللَّهِ تَعَالَى إِكْرَامُ
ذِي الشَّيْبَةِ الْمُسْلِمِ - الْحَدِيثُ

सफेद बाल वाले (बूढ़े) मुसलमान
की इज्जत करना खुदा की ताजीम
से है। इसको अबूदाऊद ने अबू

أَخْرَجَهُ أَبُو دَاوُدَ عَنْ أَبِي مُوسَى
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ -

मूसा रजियल्लाहु तआला अन्हु से
रिवायत किया।

हदीस (11) जो मुसलमान इल्मे दीन रखता हो उसके साथ बुराई
करना कितना बुरा है। कहने की ज़रूरत नहीं हुजूर सरवरे आलम
सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं।

لَيْسَ مِنْ أُمَّتِي مَنْ لَمْ يُعَلِّمْ كَثِيرًا
وَيَرْحَمْ صَغِيرًا وَيَعْرِفَ إِعَالِيهَا
حَقَّهُ - أَخْرَجَهُ أَحْمَدُ فِي الْمُسْتَدْرِ
وَالْحَاكِمُ فِي الْمُسْتَدْرِكِ وَالتَّبْرَانِيُّ
فِي الْكَبِيرِ مِنْ عِبَادَةِ بْنِ الصَّامِتِ
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ يُسْنَدٌ حَسَنٌ -

वह मेरी उम्मत से नहीं जो हमारे
बुजुर्ग की ताज़ीम न करे और छोटों
पर शफकत न करे और हमारे
आलिम के हक को न पहचाने इसको
इमाम अहमद ने मुसनद और हकिम
ने मुसतदरिक में और तिबरानी ने
कबीर में हज़रत ओबादा बिन
सामित रजियल्लाहु तआला अन्हु
से वसनदे हसन रिवायत किया।

हदीस (12) फरमाया हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने।

ثَلَاثَةٌ لَا يَسْتَحِقُّ بِحَقِّهِمْ
إِلَّا مُنَافِقٌ، ذُو شَيْبَةٍ فِي الْإِسْلَامِ
وَذُو الْعِلْمِ وَإِمَامٌ مُثْسِطٌ -
أَخْرَجَهُ الطَّبْرَانِيُّ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ بِطَرِيقٍ حَسَنَةٍ
التِّرْمِذِيُّ بِغَيْرِ هَذَا الْبَيْتِ -

तीन आदमी ऐसे हैं कि उनके हक
को वही हल्का जानेगा जो मुनाफिक
हो। पहला वह शख्स कि इस्लाम में
जिसका बाल सफेद हुआ यानी
बूढ़ा मुसलमान, दूसरा आलिम
तीसरा, बादशाह आदिल। इसको
तिबरानी ने अबू अमामा रजियल्लाहु
तआला अन्हु से रिवायत किया ऐसे
तरीके से जिसको इनाम तिर्मिजी ने
हसन कहा है दूसरे मतन के साथ।